Mechanism for Coordinated functioning in School

B.Ed. 2nd Year
Paper V School Culture, Management & Teachers
Unit - 1

Mrs. Neela Chaudhary
IASE, (C.G.)

प्रस्तावना

- किसी भी कार्य को आसानी व सहज सरल तरीके से आगे बढ़ानें व फलीभूत करने में समन्वय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शालेय प्रबंधन में वाछिंत उददेश्यों को प्राप्त करने, समय, धन व शक्तियों का उचित उपयोग बिना समन्वय के संभव नही है।
- समन्वय प्रबंधन के सभी स्तरों पर आवश्यक होता है एवं प्रबंधन की सभी क्रियाओं को प्रभावित करता है तथा कार्यों की सफलता की कुंजी समन्वय ही है।
- शालेय प्रबंधन की सभी क्रियाओं नियोजन, संगठन, कार्य विभाजन, निर्देशन एवं नियंत्रण में समन्वय की महती आवश्यकता होती है। अतः समन्वय सभी प्रबंधकीय कार्यो का समग्रीत अंग है।
- शाला में निश्चित समय अवधि में विविध प्रकार के कार्य एक व्यक्ति या समूह के द्वारा किए जाते है। जहां एक ही व्यक्ति विभिन्न समूहों में शामिल होता है। अतः संस्था के विभिन्न सदस्यों, प्रमुख एवं समुदाय के बीच आपसी समन्वय की महती आवश्यकता होती है।
- जो संस्था की उपलब्धि एवं प्रभावशीलता पर प्रभाव डालती है।

समन्वय का अर्थ

- समन्वय किसी सामूहिक कार्या में एकता एवं सामूहिक कार्य करने की भावना यकी प्रकिया या व्यवस्था है।
- समन्वय समान उददेश्यों की प्राप्ति के लिए किया गया कार्य है।
- यह वह प्रकिया है जो विभिन्न गतिविधियों के के साथ सद्भावपूर्ण वातावरण का निर्माण कर वांछित उददेश्यों को प्राप्त करना आसान कर देता है।
- किसी शाला में विभिन्न गतिविधियों में विभिन्न अलग–अलग इकाईयों का समन्वय उददेश्यों को प्रभावशाली तरीके से प्राप्त करने में सहायक होता है। अर्थात समन्वय एक एकीकरण, समग्रीकरण व समायोजन का नाम हैं जो समूह के सदस्यों के बीच समान उददेश्यों को प्राप्त करने को स्थापित करता हैं, यह एक अदृश्य शक्ति है जो सभी सदस्यों को जोड़कर रखता है।
- समन्वयन टीम के सदस्यों के बीच कार्यो के बटवारें, जवाबदेहिता एवं संसाधनों के उपयोग में एक संतुलन बनाता है।
- अतः यह कार्यों, प्रभावों एवं उददेश्य प्राप्ति के लिए एक सौहार्दपूर्ण व संतुलित समूह कार्य है।

Coordination

Definition of Coordination by different Authors

- According to **Henry Fayol** " to co-ordinate is to harmonize all the activities of a concern so as to facilitate its working and its success"

- **Mooney and Reelay**, define coordination as the orderly arrangement of group efforts to provide unity of action in the pursuit of common goals".

- **Charles Worth** opined that, "Co-ordination is the integration of several parts into an orderly hole to achieve the purpose of understanding".

- According to G.R. Terry, "Co-ordination is the orderly synchronization of efforts to provide the proper amount, timing ,and directing of execution in harmonious and unified actions to a stated objective."

- According to **Mary Parker Follett**, Co-ordination is a "Plus value of a group". That is, if there is good co-ordination then the combined group achievement will be greater than the total of the individual achievement, i.e. **2+2=5**. This is impossible in the physical world, but it is possible in human affairs through co-ordination.

- **Kogut and Zander (1996)** suggested that firms exist because they are superior than markets in achieving coordination.

Coordination

Key note: Viewing coordination as a Pyramid

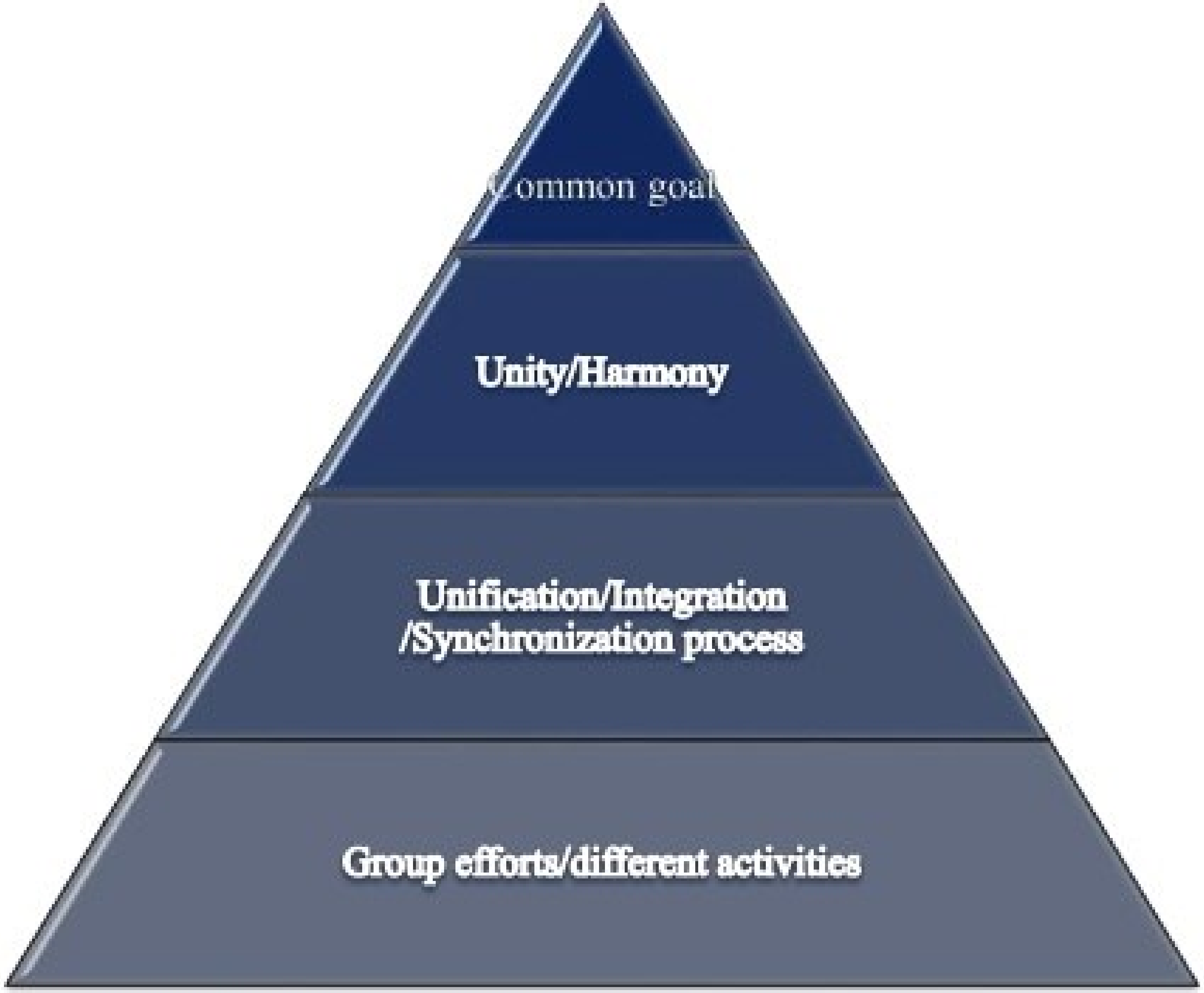

शालेय कार्यो में समन्वय के तत्व/ घटक

- **एलन** के अनुसार – किसी संस्था प्रमुख को विभिन्न कार्यो के समन्वय के लिए संतुलन, समयन एवं एकीकरण की आवश्यकता होती है।
- अतः समन्वय के मुख्य तीन घटक होते है –
- संतुलन
- समय प्रबंधन
- एकीकरण

शालेय समन्वयन की विशेषताएं

- यह एक सतत प्रकिया है।
- समान उददेश्यों की प्राप्ति के लिए किया कार्य है।
- यह समय के साथ परिवर्तनशील प्रकिया है।
- यह कार्य व उददेश्य के एकीकरण की प्रकिया है।
- यह एक सामूहिक गतिविधि होती है।
- यह किसी संस्था के सभी स्तरों पर आवश्यक होती है।
- यह किसी संस्था की मूल जवाबदेही व विशिष्ट कार्यप्रणाली होती है।

समन्वय की आवश्यकता एवं महत्व

- शाला की विभिन्न गतिविधियों व क्रियाओं की जटिलता एवं multiply करने को आसान बनाता है।
- यह कार्यो में विशिष्टता लाने या शाला के विभिन्न कार्यों के विभाजन में, इकाइयों की विविधता में एकता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- समन्वय टीम के सदस्यों की रूचि एवं शाला के क्रियाकलापों के उददेश्य प्राप्ति के बीच द्वंद्व को कम करने में आवश्यक तत्व होता है।
- समन्वय कार्यो की विविधता के बीच विभिन्न प्रकार के कार्य करते हुए कार्य की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि करती है।
- यह समूह कार्यों में /निर्देशों में सहायक होता है, ताकि स्टॉफ कार्यो व निर्देशों में समन्वय स्थापित किया जा सके।
- यह मानवीय संबंधो में नैतिकता एवं मूल्यों को स्थापित करता है।
- यह सस्थां व व्यैक्तिक उददेश्यो की प्राप्ति के बीच संतुलन बनाता है।
- विविधता में एकता।
- कार्य में विशिष्ट वर्गीकरण या विभाजन।
- द्वंद्व में कमी।
- सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण।
- कार्य की सहजता व सरलता के लिए।
- कार्य की चुनौतियों को कम करनें।

शालेय प्रबंधन में समन्वय के प्रकार

1. क्षेत्र के आधार पर समन्वय दो प्रकार का होता है।

- आंतरिक समन्वय – उर्ध्वाधर समन्वय एवं क्षैतिज समन्वय
- बाह्य समन्वय

2. सस्थागत संरचना के आधार पर समन्वय तीन प्रकार का

- एकत्रित समन्वय Pooled
- क्रमवार समन्वय Sequential
- अन्योन्य समन्वय Mutual / Reciprocal

आंतरिक समन्वय – संस्थागत विविध गतिविधियों (नियोजन, संगठन, कार्य विभाजन, निर्देशन एवं नियंत्रण) के बीच उर्ध्वाधर व क्षैतिज समन्वय को दर्शाता है।

उर्ध्वाधर समन्वय में विविध शालेय गतिविधियों के बीच संस्था प्रमुख, शिक्षक, अभिभावक एवं अन्य हितग्राही सदस्यों कें बीच समन्वय शामिल होता है। जैसे – शिक्षक व प्राचार्य के बीच समन्वय।

क्षैतिज समन्वय में एक ही स्तर पर समन्वय शामिल होता है। जैसे – शिक्षकों के बीच समन्वय।

बाह्य समन्वय – संस्था के सदस्यों का संस्था के बाहर के व्यक्तियों के साथ (अभिभावक, समुदाय एवं सहकारी संस्था) समन्वय होता है। जैसे – एक शाला का दूसरी शाला, शासकीस व अशासकीय संस्थाओं के साथ समन्वय।

समन्वय के प्रकार संस्थागत संरचना के आधार पर

- 1. यह लोकतांत्रिक शालेय वातावरण में स्वस्फूर्त समन्वय – इसमें विभिन्न विभागों या संस्था प्रमुख का सीधे कोई नियत्रंन नही होता है। इसमें दूसरो व दूसरों के कार्यों पर परोक्ष रूप से निर्भरता रहती है। इस प्रकार के समन्वय में नियमों व नीतियों में प्रमाणिकता व वास्तविकता रहती है।
- 2. श्रेणीबद्ध या क्रमवार समन्वय में समन्वय की प्रकिया एक पर दूसरों के कार्य के प्रभाव पर निर्भर करती है। जैसे – प्राचार्य के समयबद्धता का प्रभाव संस्था के अन्य सदस्यों पर होता है।
- 3. अन्योन्य समन्वय – शाला में एक स्तर पर, एक दूसरे के साथ सहयोग आपस में संबंधों पर निर्भर करती है। यह एक चक्रिय व जटिल प्रकिया है, जैसे टीम में कार्य प्रभाविता।

समन्वय के सिद्धांत

- सीधे संपर्क का सिद्धांत
- जल्द शुरूआत का सिद्धांत
- अन्योन्यता का सिद्धांत
- सतत्ता का सिद्धांत
- प्रभावी सम्प्रेषण का सिद्धांत
- प्रभावी नेतृत्व का सिद्धांत
- स्व–निर्णयन व नियमन का सिद्धांत
- गतिशीलता का सिद्धांत
- अभिप्रेरणा का सिद्धांत

Coordination

Principles of Coordination….

Principles of Coordination

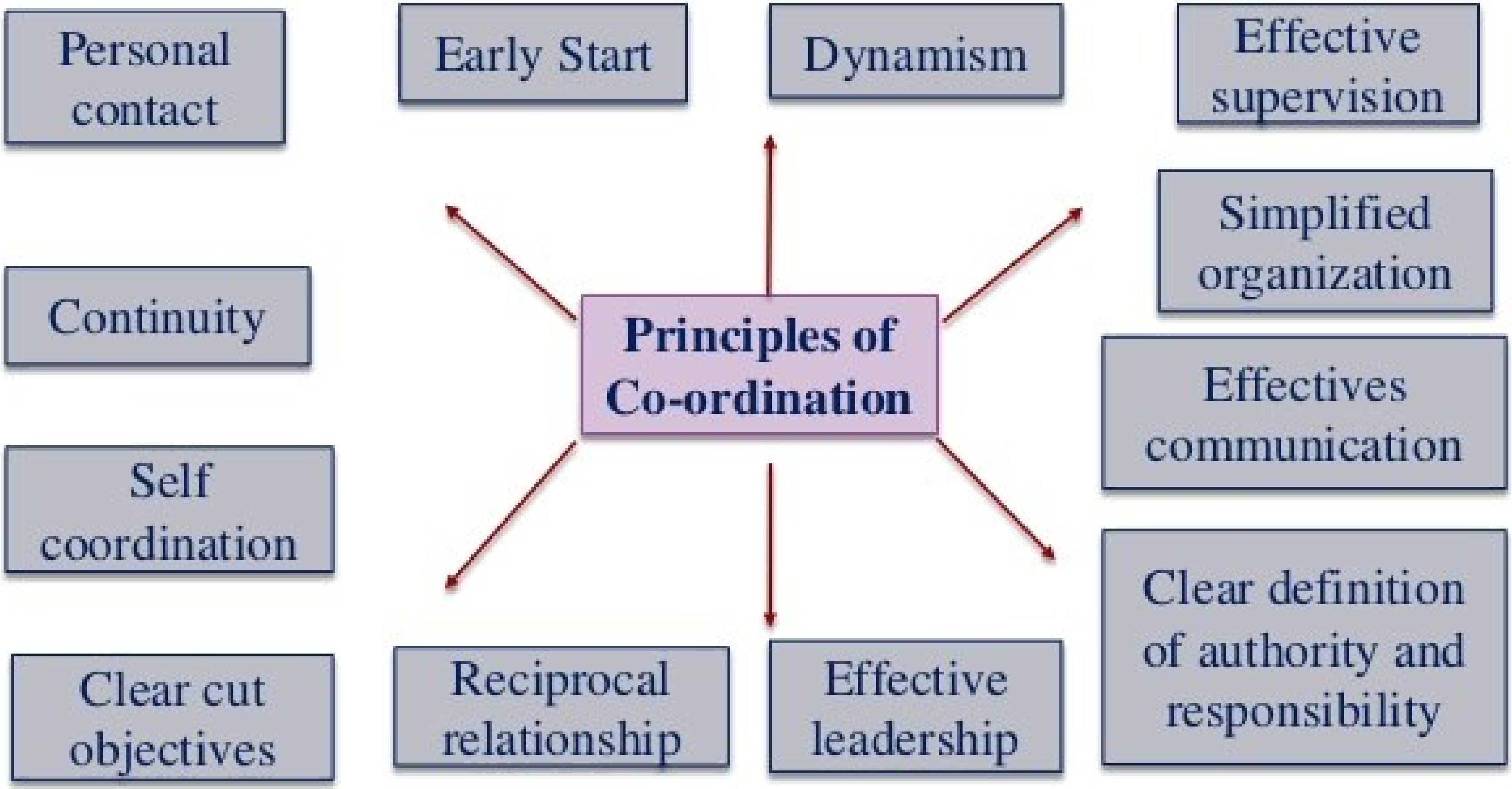

Coordination

Techniques of Coordination

- Sound planning
- Simplified organisation
- Coordination by committees
- Self Coordination
- Effective communication
- Effective leadership and supervision
- Chain of command
- Indoctrination and incentives
- Liaison departments
- General staff/Cooperation
- Voluntary coordination

समन्वय की तकनीक/ तरीकें

- Sound Planning यह समन्वय की आदर्श स्थिति है, जिसमें कार्य के समान उददेश्य नीतियां, व प्रक्रिया होती है।
- सरल सस्थांगत वातावरण – जब संस्था का वातावरण व कार्यप्रणाली सरल होती है। जिसमें संबंधों में द्वंद्व नही होता है।
- कमेटी के द्वारा समन्वय – विभिन्न निकायों के समूह/संस्था प्रमुख के निर्णयों के आधार पर समन्वय होता है।
- स्व/समन्वय –
- प्रभावी संप्रेषण –
- प्रभावी नेतृत्व व निरीक्षण –
- आदेशों की क्रमबद्धता –
- भावनाओं की समझ एवं प्रोत्साहन द्वारा –
- मेलजोल विभाग या परामर्श द्वारा –
- काम का प्रेशर या परिस्थिति के आधार पर voluntary समन्वय –
- कुछ विद्वानों के द्वारा समन्वय को दो भागों में Intrinsic & Extrinsic में बांटा गया है।

समन्वय में समस्याएं –

- प्राकृतिक समस्याएं जैसे खराब मौसम या स्वाव्थ्य इत्यादि।
- उचित प्रबंधकीय क्षमताओं का अभाव
- उचित समन्वय तकनीकों की जानकारी का न होना।
- आपस में गलतफहमी
- संसाधनों की कमी
- स्वात्तता/ स्व–पहचान की ललक
- विचारों व उददेश्यों में असहमति
- विविध आकांक्षाओं का होना
- विश्वास की कमी
- स्टाफ का बार–बार बदलना
- कार्य या टीम में बार–बार बदलाव
- कार्य उपयोगिता में कमी
- उचित निर्देशों का अभाव

Coordination

Process of Coordination

- Clearer Goals
- Proper Allocation of Work
- Sound Organization Structure
- Clearer Responsibility Relationship
- Proper Communication
- Sound Leadership

समन्वय एवं सहयोग में अंतर

- समन्वय प्रबंधन का एक भाग है परन्तु सहयोग प्रबंधन का हिस्सा हो जरूरी नही।
- समन्वय एक औपचारीक व अनौपचारिक क्रिया है जबकि सहयोग अनौपचारिक व स्वस्भूर्त।
- समन्वय कार्य के कौशल पर आधारित होता है जो समान उददेश्य प्राप्ति के लिए किया जाता हैं व कार्य की उपलब्धि को प्रभावित करता है।
- समन्वय में समूह की इच्छा शामिल होती है पर सहयोग में स्वयं की व्यैक्तिक इच्छा होती है।
- समन्वय संस्था के भीतर शामिल कार्य हैं जबकि सहयोग कही भी हो सकता है।

Coordination

Coordination and Cooperation

- Co-ordination is an orderly arrangement of efforts to provide unity of action in the fulfillment of common objective

whereas

- Co-operation denotes collective efforts of persons working in an enterprise voluntarily for the achievement of a particular purpose. It is the willingness of individuals to help each other.